॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥

अथर्ववेदीय

गोपालपूर्वतापनीयोपनिषद्

शान्तिपाठ

ॐ भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः।
स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवाꣳसस्तनूभिर्व्यशेम देवहितं यदायुः॥
स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः।
स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु॥
ॐ शान्तिः! शान्तिः!! शान्तिः!!!

प्रथम उपनिषद्

श्रीकृष्णका परब्रह्मत्व, उनका ध्यान करनेयोग्य रूप तथा अष्टादशाक्षर-मन्त्र

ॐ कृषिर्भूवाचकः शब्दो नश्च निर्वृतिवाचकः।
तयोरैक्यं परं ब्रह्म कृष्ण इत्यभिधीयते॥
ॐ सच्चिदानन्दरूपाय कृष्णायाक्लिष्टकारिणे।
नमो वेदान्तवेद्याय गुरवे बुद्धिसाक्षिणे॥ १॥

ॐ 'कृष्' शब्द सत्ताका वाचक है और 'न' शब्द आनन्दका। इन दोनोंकी जहाँ एकता है, वह सच्चिदानन्दस्वरूप परब्रह्म ही 'कृष्ण' इस नामसे प्रतिपादित होता है। ॐ अनायास ही सब कुछ कर सकनेवाले सच्चिदानन्दस्वरूप श्रीकृष्णको, जो वेदान्तद्वारा जाननेयोग्य, सबकी बुद्धिके साक्षी तथा सम्पूर्ण जगत्के गुरु हैं, सादर नमस्कार है॥ १॥

हरिः ॐ। एक समयकी बात है, मुनियोंने सुप्रसिद्ध देवता ब्रह्माजीसे पूछा—'कौन सबसे श्रेष्ठ देवता है? किससे मृत्यु भी डरती है? किसके तत्त्वको भीलभाँति जान लेनेसे सब कुछ पूर्णतः ज्ञात हो जाता है? किसके द्वारा प्रेरित होकर यह विश्व आवागमनके चक्रमें पड़ा रहता है?'॥ २॥

इन प्रश्नोंके उत्तरमें वे प्रसिद्ध ब्रह्माजी इस प्रकार बोले—"निश्चय ही 'श्रीकृष्ण' सबसे श्रेष्ठ देवता हैं! 'गोविन्द'-से मृत्यु भी डरती है! 'गोपीजन-वल्लभ' के तत्त्वको भलीभाँति जान लेनेसे यह सब कुछ पूर्णतः ज्ञात हो जाता है! 'स्वाहा' इस माया-शक्तिसे ही प्रेरित होकर यह सम्पूर्ण विश्व आवागमनके चक्रमें पड़ा रहता है"॥ ३॥

तब मुनियोंने पूछा—'श्रीकृष्ण कौन हैं? और वे गोविन्द कौन हैं? गोपीजन-वल्लभ कौन हैं? और वह स्वाहा कौन है?'॥ ४॥

यह सुनकर ब्रह्माजीने उन मुनियोंसे कहा—"पापोंका अपकर्षण (अपहरण) करनेवाले 'कृष्ण'; गौ, भूमि तथा वेदवाणीके ज्ञातारूपसे प्रसिद्ध सर्वज्ञ 'गोविन्द'; गोपीजन (जीव-समुदाय)-की अविद्या-कलाके निवारक अथवा अपनी ही अन्तरङ्गा शक्तिरूप व्रज-सुन्दरियोंमें सब ओरसे सम्पूर्ण विद्याओं एवं चौंसठ कलाओंका ज्ञान भर देनेवाले 'गोपीजन-वल्लभ' तथा इनकी मायाशक्ति 'स्वाहा'—यह सब कुछ वह परब्रह्म ही है। इस प्रकार उस श्रीकृष्णनामसे प्रसिद्ध परब्रह्मका जो ध्यान करता है, जप आदिके द्वारा उनके नामामृतका रसास्वादन करता है तथा उनके भजनमें लगा रहता है, वह अमृतस्वरूप होता है (अर्थात् भगवद्भावको ही प्राप्त हो जाता है)"॥ ५-६॥

तब उन मुनियोंने पुनः प्रश्न किया—'भगवन्! श्रीकृष्णका ध्यान करनेयोग्य रूप कैसा है? उनके नामामृतका रसास्वादन कैसे होता है? तथा उनका भजन किस प्रकार किया जाता है? यह सब हम जानना चाहते हैं; अतः हमें बताइये'॥ ७॥

तब वे हिरण्यगर्भ ब्रह्माजी स्पष्ट शब्दोंमें उत्तर देते हुए बोले, 'भगवान्का ध्यान करनेयोग्य रूप इस प्रकार है—ग्वाल-बालका-सा उनका वेष है, नूतन जलधरके समान श्याम वर्ण है, किशोर अवस्था है तथा वे दिव्य

कल्पवृक्षके नीचे विराज रहे हैं।' इसी विषयमें यहाँ ये श्लोक भी हैं— ॥ ८-९ ॥

सत्पुण्डरीकनयनं मेघाभं वैद्युताम्बरम्।
द्विभुजं ज्ञानमुद्राढ्यं वनमालिनमीश्वरम्॥
गोपगोपीगवावीतं सुरद्रुमतलाश्रितम्।
दिव्यालङ्करणोपेतं रत्नपङ्कजमध्यगम्॥
कालिन्दीजलकल्लोलसङ्गिमारुतसेवितम् ।
चिन्तयंश्चेतसा कृष्णं मुक्तो भवति संसृतेः॥

भगवान्‌के नेत्र विकसित श्वेत कमलके समान परम सुन्दर हैं, उनके श्रीअङ्गोंकी कान्ति मेघके समान श्याम है, वे विद्युत्‌के सदृश तेजोमय पीताम्बर धारण किये हुए हैं, उनकी दो भुजाएँ हैं, वे ज्ञानकी मुद्रामें स्थित हैं, उनके गलेमें पैरोंतक लम्बी वनमाला शोभा पा रही है, वे ईश्वर हैं—ब्रह्मा आदि देवताओंपर भी शासन करनेवाले हैं, गोपों तथा गोप-सुन्दरियोंद्वारा वे चारों ओरसे घिरे हुए हैं, कल्पवृक्षके नीचे वे स्थित हैं, उनका श्रीविग्रह दिव्य आभूषणोंसे विभूषित है, रत्नसिंहासनपर रत्नमय कमलके मध्यभागमें वे विराजमान हैं। कालिन्दी-सलिलसे उठती हुई चञ्चल लहरोंको चूमकर बहनेवाली शीतल-मन्द-सुगन्ध वायु भगवान्‌की सेवा कर रही है। इस रूपमें भगवान् श्रीकृष्णका मनसे चिन्तन करनेवाला भक्त संसार-बन्धनसे मुक्त हो जाता है॥ १०—१२॥

अब पुनः उनके नामामृतके रसास्वादन तथा मन्त्र-जपका प्रकार बतलाते हैं— ॥ १३ ॥

जलवाचक 'क्' भूमिका बीज 'ल्', 'ई' तथा चन्द्रमाके समान आकार धारण करनेवाला अनुस्वार—इन सबका समुदाय है—'**क्लीं**'; यही काम-बीज है। इसको आदिमें रखकर '**कृष्णाय**' पदका उच्चारण करे। यह '**क्लीं कृष्णाय**' सम्पूर्ण मन्त्रका एक पद है। '**गोविन्दाय**' यह दूसरा पद है। '**गोपीजन**' यह तीसरा पद है। '**वल्लभाय**' यह चौथा पद है और '**स्वाहा**' यह पाँचवाँ पद है। पाँच पदोंका यह '**क्लीं कृष्णाय गोविन्दाय गोपीजनवल्लभाय स्वाहा**' मन्त्र 'पञ्चपदी' कहलाता है। आकाश, पृथ्वी, सूर्य, चन्द्रमा और अग्नि—इन सबका प्रकाशक अथवा स्वरूप होनेके कारण यह चिन्मय मन्त्र पाँच अङ्गोंसे युक्त है। अतः—

क्लीं कृष्णाय दिवात्मने हृदयाय नमः। गोविन्दाय भूम्यात्मने शिरसे स्वाहा। गोपीजनसूर्यात्मने शिखायै वषट्। वल्लभाय चन्द्रात्मने कवचाय हुम्। स्वाहा अग्न्यात्मनेऽस्त्राय फट्।

—इस प्रकार पञ्चाङ्गन्यास करके इस पाँच पद और पाँच अङ्गोंवाले मन्त्रका जप करनेवाला साधक मन्त्रात्मक होनेसे परब्रह्मस्वरूप श्रीकृष्णको प्राप्त होता है, परब्रह्मस्वरूप श्रीकृष्णको प्राप्त होता है॥ १४॥

द्वितीय उपनिषद्

श्रीकृष्णोपासनाकी विधि तथा यन्त्र-निर्माणका प्रकार

इस विषयमें यह श्लोक (मन्त्र) है—"जो उपासक '**क्लीं**' इस कामबीजको आदिमें रखकर '**कृष्णाय**' इस पदका, '**गोविन्दाय**' इस पदका तथा '**गोपीजनवल्लभाय**' इस पदका '**स्वाहा**' सहित एक ही साथ उच्चारण करेगा, उसे शीघ्र ही श्रीकृष्ण-मिलनरूपा सद्गति प्राप्त होगी। उसके लिये दूसरी गति नहीं है।" इन श्रीकृष्णभगवान्‌की भक्ति ही भजन है। उस भजनका स्वरूप है—इस लोक तथा परलोकके समस्त भोगोंकी कामनाका सर्वथा परित्याग करके इन श्रीकृष्णमें ही इन्द्रियोंसहित मनको लगा देना। यही नैष्कर्म्य (वास्तविक संन्यास) भी है। उन सच्चिदानन्दमय भगवान् श्रीकृष्णका वेदज्ञ ब्राह्मण नाना प्रकारसे यजन करते हैं, 'गोविन्द' नामसे प्रसिद्ध उन भगवान्‌की अनेक प्रकारसे आराधना करते हैं। वे 'गोपीजनवल्लभ' (जीवमात्रके अकारण सुहृद् एवं प्रियतम तथा गोप-सुन्दरियोंके प्राणाधार) श्यामसुन्दर ही सम्पूर्ण लोकोंका पालन करते हैं और संकल्परूप उत्तम वीर्यवाले उन भगवान्‌ने ही 'स्वाहा' (अपनी मायाशक्ति)-का आश्रय लेकर जगत्‌को उत्पन्न किया है। जैसे सम्पूर्ण विश्वमें फैला हुआ एक ही वायुतत्त्व प्रत्येक शरीरके भीतर प्राण आदि पाँच रूपोंसे अभिव्यक्त हुआ है, उसी प्रकार भगवान् श्रीकृष्ण एक होते हुए भी इस उपर्युक्त मन्त्रमें भिन्न-भिन्न नामसे पाँच नामोंवाले प्रतीत होते हैं—वास्तवमें 'कृष्ण' आदि पाँच नामोंद्वारा एक ही भगवान्‌का प्रतिपादन होता है॥ १—५॥

तत्पश्चात् उन मुनियोंने कहा—'सम्पूर्ण जगत्‌के

कल्याण

गोपाल-यन्त्र

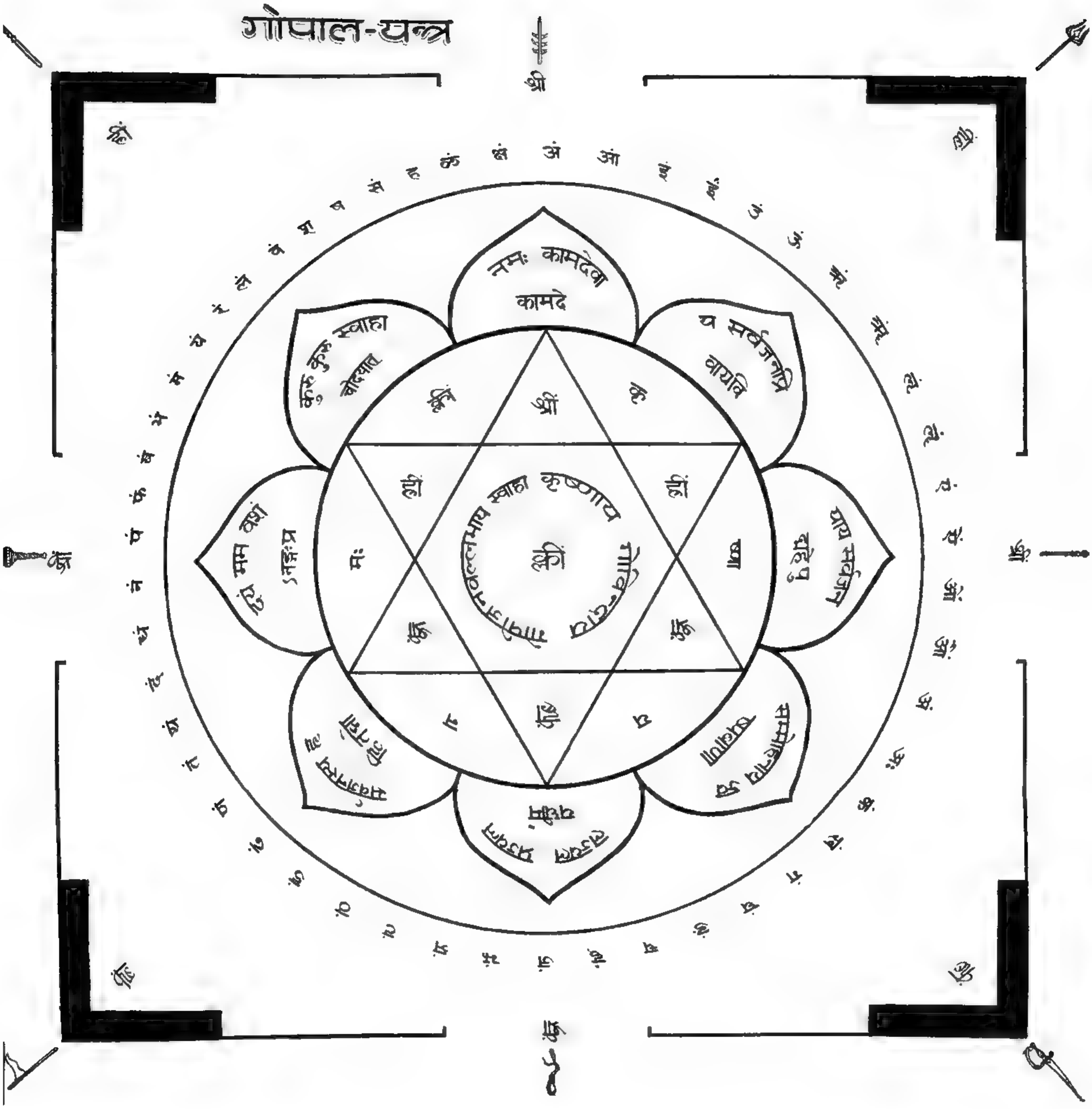

आश्रयभूत परमात्मा गोविन्दकी उपासना कैसे होती है? इसका उपदेश दीजिये'॥ ६॥

तब ब्रह्माजीने उन प्रसिद्ध मुनियोंसे भगवान्‌का जो पीठ है, उसका वर्णन करते हुए कहा—पीठपर सुवर्णमय अष्टदल कमल बनाये। उसके मध्यभाग (कर्णिका)-में दो त्रिकोण लिखे, जो एक-दूसरेसे सम्पुटित हों। इस प्रकार छः कोण होंगे। इन कोणोंके मध्यभागमें स्थित जो कर्णिका है, उसमें आदि-अक्षररूप कामबीजका, जो सम्पूर्ण कार्योंकी सिद्धिका अमोघ साधन है, उल्लेख करे। फिर प्रत्येक कोणमें '**क्लीं**' बीजसहित '**कृष्णाय नमः**' मन्त्रके एक-एक अक्षरका अङ्कन करे। तत्पश्चात् ब्रह्म-मन्त्र अर्थात् अष्टादशाक्षर गोपाल-विद्या एवं काम-गायत्रीका यथावत् उल्लेख करके आठ वज्रोंसे घिरे हुए भूमण्डलका उल्लेख करे। तत्पश्चात् उक्त मन्त्रको अङ्ग, वासुदेवादि, रुक्मिणी आदि स्वशक्ति एवं इन्द्र आदि, वसुदेव आदि, पार्थ आदि तथा निधि आदि आठ आवरणोंसे आवेष्टित करके उसकी पूजा करे।*

धारणके लिये यन्त्र

* यन्त्रकी स्पष्ट विधि इस प्रकार समझनी चाहिये। अपने घरपर गोबर और जलसे भूमिको लीप दे। फिर उस शुद्ध भूमिमें धोया हुआ पीठ स्थापित करके उसके ऊपर सुवर्णमय अष्टदल कमलकी स्थापना करे अथवा घिसे हुए चन्दनमें रोली या केसर मिलाकर उसीसे अष्टदल कमलका रेखाचित्र बना ले। तदनन्तर उस अष्टदल कमलके मध्यभाग (बीचकी कर्णिका)-में परस्पर सम्पुटित दो त्रिकोण खींच ले। इस प्रकार छः कोण बन जायँगे। इन कोणोंके मध्यभागमें आदि अक्षररूप कामबीज (क्लीं)-का, जो सम्पूर्ण कार्योंकी सिद्धिका बीज है, उल्लेख करे। साथ ही साध्य व्यक्तिका तथा उसके कार्यका भी उल्लेख करे (यथा—'अमुकस्य अमुकं कार्यं सिद्ध्यतु')। ऐसा उल्लेख तभी आवश्यक है, जब धारण करनेके लिये यन्त्र बनाया गया हो। पूजाके लिये निर्मित यन्त्रमें साध्य और कार्यका नाम आवश्यक नहीं है। इसके बाद जो छहों कोण हैं, उनमें 'क्लीं कृष्णाय नमः' इस मन्त्रके एक-एक अक्षरका उल्लेख करे। तत्पश्चात् कोणोंके मध्यभाग अर्थात् कर्णिकामें लिखे हुए पूर्वोक्त 'क्लीं' बीजके चारों ओर अष्टादशाक्षर-मन्त्रको इस प्रकार लिखे, जिससे वह उसके द्वारा आवेष्टित हो जाय। तदनन्तर छहों कोणोंमेंसे जो पूर्व, नैर्ऋत्य और वायव्यवाले कोण हैं, उनमें श्रीबीज (श्रीं)-का उल्लेख करे तथा पश्चिम, अग्निकोण और ईशानवाले कोणोंमें माया-बीज (ह्रीं)-को अङ्कित करे। फिर अष्टदलोंके केसरोंमें तीन-तीन अक्षरके क्रमसे चौबीस अक्षरोंकी काम-गायत्रीका उल्लेख करे। कामगायत्री इस प्रकार है—'कामदेवाय विद्महे, पुष्पबाणाय धीमहि, तन्नोऽनङ्गः प्रचोदयात्।' इसके बाद प्रत्येक दलमें छः-छः अक्षरके क्रमसे अड़तालीस अक्षरवाले काम-मालामन्त्रका लेखन करे। वह मन्त्र इस प्रकार है—'नमः कामदेवाय सर्वजनप्रियाय सर्वजनसंमोहनाय ज्वल ज्वल प्रज्वल सर्वजनस्य हृदयं मम वशं कुरु कुरु स्वाहा।' इसके बाद अष्टदलोंके बाहर गोल रेखा खींचकर उसके ऊपर अकारादि इक्यावन अक्षरोंकी पूरी वर्णमालाको इस प्रकार लिखे, जिससे सम्पूर्ण अष्टदल-कमल घिर जाय। फिर इस समस्त चक्रके बाह्यभागमें चौकोर भूमण्डल बनाये। उसके पूर्वादि दिशाओंमें तो श्रीबीज (श्रीं)-का उल्लेख करे और कोणोंमें मायाबीज (ह्रीं) लिखे। तत्पश्चात् इस भूमण्डलकी आठ दिशाओंमें आठ वज्र अङ्कित करे। वज्र, शक्ति, दण्ड, खड्ग, पाश, ध्वज, गदा और शूल—यह वज्रादि-अष्टक ही आठ वज्र कहे गये हैं। इस प्रकार जो यन्त्र बनेगा, वह धारण करनेयोग्य होगा। इसीमें पूर्वकथित साध्य और कार्यका उल्लेख आवश्यक है। इसके धारणकी विधि यों है—यन्त्रधारणके समय पहले देव-पूजन करके मन्त्रोच्चारणपूर्वक एक सहस्र घीकी आहुतियाँ अग्निमें डाले। प्रत्येक आहुतिका हुतशेष घृत यन्त्रपर ही डाले। आहुतियाँ समाप्त होनेपर यन्त्रका मार्जन करे। फिर दस सहस्र बार अष्टादशाक्षर-मन्त्रका जप करके इस उत्तम यन्त्रको धारण करना चाहिये। इसे विधिपूर्वक धारण करनेवाले पुरुषको त्रिभुवनका ऐश्वर्य मिल सकता है तथा वह देवताओंके लिये भी आदरणीय हो जाता है।

पूजनके लिये यन्त्र

जब पूजाके लिये यन्त्र-निर्माण किया जाय, तब भी यन्त्रका स्वरूप तो वैसा ही रहेगा; केवल साध्य और कार्यका नाम नहीं रहेगा। इसके सिवा यन्त्र-पूजाके पहले पीठकी विभिन्न दिशाओंमें कुछ देवताओंका पूजन कर लेना आवश्यक होगा तथा पीठस्थ यन्त्रके चारों ओर आवरण-देवताओंकी भी स्थापना और पूजा आवश्यक होगी। यहाँ पहले पीठके सब ओर पूजित होनेवाले देवताओंका क्रम बताया जाता है—

पहले पीठके उत्तरभागमें वायव्यकोणसे लेकर ईशानकोणतक चतुर्विध गुरुओंका पूजन करे, यथा—'ॐ गुरुभ्यो नमः, परमगुरुभ्यो नमः, परात्परगुरुभ्यो नमः, परमेष्ठिगुरुभ्यो नमः।' फिर पीठके दक्षिण भागमें गणेशका आवाहन-पूजन करे। तत्पश्चात् यन्त्रगत अष्टदल कमलकी कर्णिकाके निम्नभागमें—आधारशक्ति, प्रकृति, कमठ, शेष, पृथ्वी, क्षीरसागर, श्वेतद्वीप, रत्नमण्डप तथा कल्पवृक्ष—इन नौकी पूजा करे। यह पूजा भावनाद्वारा कर्णिकामें ही कर ली जायगी। फिर पीठ (चौकी)-के पायोंमें धर्म, ज्ञान, वैराग्य और ऐश्वर्यकी पूजा करे। क्रम इस प्रकार होगा—अग्निकोणमें धर्म, नैर्ऋत्यकोणमें ज्ञान, वायव्यकोणमें वैराग्य तथा ईशानकोणमें ऐश्वर्यकी पूजा होगी। इसी प्रकार पीठके पूर्वादि अवयवोंमें भी क्रमशः धर्म आदिकी पूजा होगी। इसके बाद कर्णिकामें ही क्रमशः 'अनन्ताय नमः', 'पद्माय नमः',

उक्त आवरणोंसे परिवेष्टित श्रीकृष्णचन्द्रका तीनों संध्याओंके समय ध्यान करके षोडश आदि उपचारोंद्वारा सदा उनका पूजन करना चाहिये। इस प्रकार पूजा करनेसे उपासकको धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष—सब कुछ प्राप्त हो जाता है, सब कुछ प्राप्त हो जाता है॥ ७॥

इस विषयमें ये श्लोक हैं—

एको वशी सर्वगः कृष्ण ईड्य
एकोऽपि सन् बहुधा यो विभाति।
तं पीठस्थं येऽनुयजन्ति धीरा-
स्तेषां सुखं शाश्वतं नेतरेषाम्॥ ८॥

'अं द्वादशकलाव्याप्तसूर्यमण्डलात्मने नमः', 'ॐ षोडशकलाव्याप्तचन्द्रमण्डलात्मने नमः', 'मं दशकलाव्याप्तवह्निमण्डलात्मने नमः', 'सं सत्त्वाय नमः', 'रं रजसे नमः', 'तं तमसे नमः', 'आं आत्मने नमः', 'अं अन्तरात्मने नमः', 'पं परमात्मने नमः', 'ह्रीं ज्ञानात्मने नमः'—इन मन्त्रोंद्वारा पूजा करे। फिर अष्टदल कमलके प्रत्येक दलमें क्रमशः 'विमलायै नमः', 'उत्कर्षिण्यै नमः', 'ज्ञानायै नमः', 'क्रियायै नमः', 'योगायै नमः', 'प्रह्व्यै नमः', 'सत्यायै नमः', 'ईशानायै नमः'—इस मन्त्रोंसे विमला आदि आठ शक्तियोंकी पूजा करके पुनः कर्णिकामें 'अनुग्रहायै नमः' इस मन्त्रसे नवीं शक्तिकी पूजा करे। तत्पश्चात् 'ॐ नमो विष्णवे सर्वभूतात्मने वासुदेवाय सर्वात्मसंयोगाय पद्मपीठात्मने नमः' इस पीठमन्त्रका अष्टदल कमलके ऊपर विन्यास करके पीठकी पूजा करे। फिर पीठपर भगवान् श्रीकृष्णका आवाहन और ध्यान करके षोडशोपचारसे पूजन करना चाहिये।

भगवान्‌का ध्यान इस प्रकार करे—

स्मरेद् वृन्दावने रम्ये मोदयन्तं मनोरमम्। गोविन्दं पुण्डरीकाक्षं गोपकन्याः सहस्रशः॥
आत्मनो वदनाम्भोजप्रेरिताक्षिमधुव्रताः। पीडिताः कामबाणेन चिरमाश्लेषणोत्सुकाः॥
मुक्ताहारलसत्पीनतुङ्गस्तनभरान्विताः। स्रस्तधम्मिल्लवसना मदस्खलितभूषणाः॥
दन्तपङ्क्तिप्रभोद्भासिस्पन्दमानाधराञ्चिताः। विलोभयन्त्यो विविधैर्विभ्रमैर्भावगर्भितैः॥
फुल्लेन्दीवरकान्तिमिन्दुवदनं बर्हावतंसप्रियं श्रीवत्साङ्कमुदारकौस्तुभधरं पीताम्बरं सुन्दरम्।
गोपीनां नयनोत्पलार्चिततनुं गोगोपसंघावृतं गोविन्दं कलवेणुवादनपरं दिव्याङ्गभूषं भजे॥

तत्पश्चात् आवरण-पूजा करनी चाहिये। यह आवरण-पूजा अष्टदल कमलमें ही करनी चाहिये। इसका प्रथम आवरण इस प्रकार है। छः कोणोंमेंसे आग्नेयकोणमें 'हृदयाय नमः', नैर्ऋत्यकोणमें 'शिरसे स्वाहा', वायव्यकोणमें 'शिखायै वषट्', ईशानकोणमें 'कवचाय हुम्', अग्रभागमें 'नेत्रत्रयाय वौषट्' तथा पूर्व आदि चारों दिशाओंमें 'अस्त्राय फट्' इस प्रकार मन्त्रोच्चारणपूर्वक पूजन करे।

द्वितीय आवरण—पूर्वदिशामें 'वासुदेवाय नमः', दक्षिणमें 'सङ्कर्षणाय नमः', पश्चिममें 'प्रद्युम्नाय नमः', उत्तरमें 'अनिरुद्धाय नमः'—इन मन्त्रोंसे पूजा करके अग्निकोणमें 'शक्त्यै नमः', नैर्ऋत्यकोणमें 'श्रियै नमः', वायव्यकोणमें 'सरस्वत्यै नमः' तथा ईशानकोणमें 'रत्यै नमः'—इन मन्त्रोंद्वारा शक्ति आदिका पूजन करे।

तृतीय आवरण—फिर कमलके आठ दलोंमें पूर्वादि दिशाओंके क्रमसे रुक्मिणी आदि आठ पटरानियोंकी स्थापना और पूजा करे—यथा रुक्मिण्यै नमः, सत्यभामायै नमः, जाम्बवत्यै नमः, नाग्नजित्यै नमः, मित्रविन्दायै नमः, कालिन्द्यै नमः, लक्ष्मणायै नमः, सुशीलायै नमः।

चतुर्थ आवरण—यहाँ पूर्वमें पीतवर्ण वसुदेव, अग्निकोणमें श्यामवर्णा देवकी, दक्षिणमें कर्पूरगौरवर्ण नन्द, नैर्ऋत्यमें कुङ्कुम-सदृश गौरवर्णा यशोदा, पश्चिममें शङ्ख, कुन्द एवं चन्द्रके समान उज्ज्वल वर्णवाले बलदेव, वायव्यकोणमें मयूरपिच्छतुल्य श्यामवर्णा सुभद्रा, उत्तरमें गोपगण तथा ईशानकोणमें गोपाङ्गनाओंकी क्रमशः पूजा करनी चाहिये। इनके नामको चतुर्थ्यन्त करके 'नमः' लगा देनेसे पूजाका मन्त्र हो जाता है।

पञ्चम आवरण—कमलके मध्यभागमें क्रमशः अर्जुन, निशठ, उद्धव, दारुक, विष्वक्सेन, सात्यकि, गरुड, नारद तथा पर्वतकी पूजा नाम-मन्त्रोंसे ही करे।

षष्ठ आवरण—पूर्वमें 'इन्द्रनिधये नमः', अग्निकोणमें 'नीलनिधये नमः', दक्षिणमें 'स्कन्दाय नमः', नैर्ऋत्यकोणमें 'मकराय नमः', पश्चिममें 'आनन्दाय नमः', वायुकोणमें 'कच्छपाय नमः', उत्तरमें 'शङ्खाय नमः' तथा ईशानकोणमें 'पद्मनिधये नमः'—इस प्रकार पूजन करे।

सप्तम आवरण—पूर्वमें पीतवर्ण इन्द्र, अग्निकोणमें रक्तवर्ण अग्नि, दक्षिणमें नीलोत्पलवर्ण यम, नैर्ऋत्यकोणमें कृष्णवर्ण राक्षसाधिपति निर्ऋति, पश्चिममें शुक्लवर्ण वरुण, वायव्यमें धूम्रवर्ण वायु, उत्तरमें नीलवर्ण कुबेर तथा ईशानकोणमें श्वेतवर्ण ईशानका नाम-मन्त्रद्वारा ही पूजन करे।

अष्टम आवरण—पूर्व और ईशानके मध्यमें गोरोचनवर्ण ब्रह्मा, नैर्ऋत्यकोण और पश्चिमके मध्यमें शुक्लवर्ण शेषनाग, पूर्व दलमें पीतवर्ण वज्र, अग्निकोणवाले दलमें शुक्लवर्णा शक्ति, दक्षिण दलमें नीलवर्ण दण्ड, नैर्ऋत्य दलमें श्वेतवर्ण खड्ग, पश्चिम दलमें विद्युद्वर्ण पाश, वायव्य दलमें रक्तवर्ण ध्वज, उत्तर दलमें नीलवर्णा गदा तथा ईशान दलमें शुक्लवर्ण त्रिशूलकी नाम-मन्त्रद्वारा ही पूजा करे।

नित्यो नित्यानां चेतनश्चेतनाना-
मेको बहूनां यो विदधाति कामान्।
तं पीठगं येऽनुयजन्ति धीरा-
स्तेषां सिद्धिः शाश्वती नेतरेषाम्॥ ९॥
एतद् विष्णोः परमं पदं ये
नित्योद्युक्ताः संयजन्ते न कामात्।
तेषामसौ गोपरूपः प्रयत्नात्
प्रकाशयेदात्मपदं तदैव॥ १०॥
यो ब्रह्माणं विदधाति पूर्वं
यो विद्यास्तस्मै गापयति स्म कृष्णः।
तं ह देवमात्मबुद्धिप्रकाशं
मुमुक्षुर्वै शरणमनुव्रजेत्॥ ११॥
ॐकारेणान्तरितं ये जपन्ति
गोविन्दस्य पञ्चपदं मनुं तम्।
तेषामसौ दर्शयेदात्मरूपं
तस्मान्मुमुक्षुरभ्यसेन्नित्यशान्त्यै॥ १२॥

'एकमात्र सबको वशमें रखनेवाले सर्वव्यापी भगवान् श्रीकृष्ण सर्वथा स्तवन करनेयोग्य हैं। वे एक होते हुए भी अनेक रूपोंमें प्रकाशित हो रहे हैं। जो धीर भक्तजन पूर्वोक्त पीठपर विराजमान उन भगवान्‌का प्रतिदिन पूजन करते हैं, उन्हींको शाश्वत सुख प्राप्त होता है, दूसरोंको नहीं। जो नित्योंके भी नित्य हैं, चेतनोंके भी परम चेतन हैं और एक ही सबकी कामनाएँ पूर्ण करते हैं, उन भगवान् श्रीकृष्णको पूर्वोक्त पीठमें स्थापित करके जो धीर पुरुष निरन्तर उनका पूजन करते हैं, उन्हींको सनातन सिद्धि प्राप्त होती है, दूसरोंको नहीं। जो नित्य उत्साहपूर्वक उद्यत रहकर श्रीविष्णुके परमपदस्वरूप इस मन्त्रकी विधिपूर्वक पूजा करते हैं तथा भगवान्‌के सिवा दूसरी किसी वस्तुकी कामना नहीं करते, उनके लिये वे गोपालरूपधारी भगवान् श्यामसुन्दर अपना स्वरूप तथा अपना परम धाम तत्काल ही प्रयत्नपूर्वक प्रकाशित कर देते हैं। जो श्रीकृष्ण सृष्टिके प्रारम्भमें ब्रह्माजीको उत्पन्न करते हैं तथा निश्चय ही जो उनको वेदविद्याका उपदेश करके उनसे उसका गान करवाते हैं, समस्त जीवोंकी बुद्धिको प्रकाश (ज्ञान) देनेवाले उन भगवान्‌की शरणमें मुमुक्ष पुरुष अवश्य जाय। जो साधक भगवान् गोविन्दके उस पाँच पदवाले सुप्रसिद्ध अष्टादशाक्षर-मन्त्रको ॐकारसे सम्पुटित करके जपते हैं, उन्हींको वे भगवान् शीघ्र अपने स्वरूपका साक्षात्कार कराते हैं; अतः संसार-बन्धनसे छूटनेकी इच्छा रखनेवाला मनुष्य नित्य-शान्तिकी प्राप्तिके लिये अवश्य ही उक्त मन्त्रका जप करे'॥ ८—१२॥

इस पाँच पदवाले मन्त्रसे ही और भी दशाक्षर आदि मन्त्र उत्पन्न हुए हैं, जो मनुष्योंके लिये कल्याणकारी हैं। उन दशाक्षर आदि मन्त्रोंको भी ऐश्वर्यकी इच्छावाले इन्द्र आदि देवता न्यास, ध्यान आदि यथावत् विधिके साथ जपते रहते हैं॥ १३॥

तृतीय उपनिषद्

अष्टादशाक्षरका अर्थ

'यदि ऐसी बात है तो इन भगवान् श्रीकृष्णके स्वरूपभूत मन्त्रका अर्थ (अभिप्राय और प्रयोजन) क्या है? यह आप अपनी वाणीद्वारा समझाइये।' इस प्रकार उन सनकादि मुनियोंने पूछा। तब सब लोकोंमें विख्यात ब्रह्माजीने उनके उस प्रश्नके उत्तरमें इस प्रकार कहा—'मुनिवरो! सुनो; मुझ ब्रह्माकी जो दो परार्धकी आयु होती है, उसे व्यतीत करता हुआ मैं पूर्वकालमें भगवान्‌का निरन्तर ध्यान और स्तवन करता रहा। इस प्रकार जब एक परार्ध बीत गया, तब भगवान्‌का ध्यान मेरी ओर आकृष्ट हुआ; फिर वे दया करके गोपवेषधारी श्यामसुन्दर पुरुषोत्तमके रूपमें मेरे सामने प्रकट हुए। तब मैंने भक्तिपूर्वक उनके चरणोंमें प्रणाम किया। तदनन्तर उन्होंने दयार्द्र हृदयसे मुझपर अनुग्रह करके सृष्टि-रचनाके लिये अपने स्वरूपभूत अष्टादशाक्षर-मन्त्रका मुझे उपदेश दिया और तत्काल अन्तर्धान हो गये। फिर जब मेरे हृदयमें सृष्टिकी इच्छा हुई, तब अष्टादशाक्षर-मन्त्रके उन सभी अक्षरोंमें भावी जगत्‌के स्वरूपका दर्शन कराते हुए वे पुनः मेरे सम्मुख प्रकट हो गये। तब मैंने इस मन्त्रमें जो 'क्' अक्षर है, उससे जलकी, 'ल्' अक्षरसे पृथ्वीकी, 'ई' से अग्नि-तत्त्वकी, अनुस्वारसे चन्द्रमाकी तथा इन सबके समुदायरूप '**क्लीं**' से सूर्यकी रचना की। मन्त्रके द्वितीय पद '**कृष्णाय**' से आकाशकी और आकाशसे वायुकी सृष्टि की। उसके बादवाले '**गोविन्दाय**' पदसे कामधेनु गौ तथा वेदादि विद्याओंको प्रकट किया। उसके पश्चात् जो '**गोपीजनवल्लभाय**' पद है, उससे स्त्री-पुरुष आदिकी रचना की तथा सबसे अन्तमें जो '**स्वाहा**' पद है, उससे इस समस्त जड-चेतनमय चराचर जगत्‌को उत्पन्न किया॥ १-२॥

चतुर्थ उपनिषद्

गोपाल-मन्त्रके जपकी महिमा; उससे गोलोक-धामकी प्राप्ति

इन भगवान् श्रीकृष्णके ही पूजन तथा उनके ॐकारसे सम्पुटित अष्टादशाक्षर-मन्त्रके ही जपसे पूर्वकालमें राजर्षि चन्द्रध्वज मोहरहित होकर आत्मज्ञान प्राप्त करके असङ्ग हो गये॥ १॥

भगवान् श्रीकृष्णके उस परमधाम गोलोकको ज्ञानी एवं प्रेमी भक्तजन सदा देखते हैं। आकाशमें सूर्यकी भाँति वह परम व्योममें सब ओर व्याप्त तथा प्रकाशमान है। उस परमधामकी प्राप्ति पूर्वोक्त अष्टादशाक्षर-मन्त्रके जपसे ही होती है; इसलिये इसका नित्य जप करे॥ २-३॥

पञ्चम उपनिषद्

श्रीकृष्णका स्वरूप एवं उनका स्तवन

उक्त मन्त्रके विषयमें कुछ मुनिगण यों कहते हैं—'जिसके प्रथम पद (**क्लीं**)-से पृथ्वी, द्वितीय पद (**कृष्णाय**)-से जल, तृतीय पद (**गोविन्दाय**)-से तेज, चतुर्थ पद (**गोपीजनवल्लभाय**)-से वायु तथा अन्तिम पञ्चम पद (**स्वाहा**)-से आकाशकी उत्पत्ति हुई है, वह वैष्णव पञ्चमहाव्याहृतियोंवाला अष्टादशाक्षर-मन्त्र श्रीकृष्णके स्वरूपको प्रकाशित करनेवाला है। उसका मोक्ष-प्राप्तिके लिये सदा ही जप करते रहना चाहिये'॥ १॥

इस विषयमें यह गाथा प्रसिद्ध है—

जिस मन्त्रके प्रथम पदसे पृथ्वी प्रकट हुई, द्वितीय पदसे जलका प्रादुर्भाव हुआ, तृतीय पदसे तेजस्तत्त्वका प्राकट्य हुआ, चतुर्थ पदसे अग्नितत्त्व आविर्भूत हुआ तथा पञ्चम पदसे आकाशकी उत्पत्ति हुई, एकमात्र उसी अष्टादशाक्षर-मन्त्रका निरन्तर अभ्यास (जप) करे। उसीके जपसे राजर्षि चन्द्रध्वज भगवान् श्रीकृष्णके अविनाशी परमधाम गोलोकको प्राप्त हो गये॥ २-३॥

अतः वह जो परम विशुद्ध, विमल, शोकरहित, लोभ आदिसे शून्य, सब प्रकारकी आसक्ति एवं वासनासे वर्जित गोलोकधाम है, वह उक्त पाँच पदोंवाले मन्त्रसे अभिन्न है तथा वह मन्त्र साक्षात् वासुदेवस्वरूप ही है, जिस वासुदेवसे भिन्न दूसरा कुछ भी नहीं है। वे एकमात्र भगवान् गोविन्द पञ्चपद मन्त्रस्वरूप हैं। उनका श्रीविग्रह सच्चिदानन्दमय है। वे वृन्दावनमें कल्पवृक्षके नीचे रत्नमय सिंहासनपर सदा विराजमान रहते हैं। मैं मरुद्गणोंके साथ रहकर (इन) उत्तम स्तुतियोंद्वारा उन भगवान्‌को संतुष्ट करता हूँ॥ ४-५॥

ॐ नमो विश्वरूपाय विश्वस्थित्यन्तहेतवे।
विश्वेश्वराय विश्वाय गोविन्दाय नमो नमः॥ ६॥
नमो विज्ञानरूपाय परमानन्दरूपिणे।
कृष्णाय गोपीनाथाय गोविन्दाय नमो नमः॥ ७॥
नमः कमलनेत्राय नमः कमलमालिने।
नमः कमलनाभाय कमलापतये नमः॥ ८॥
बर्हापीडाभिरामाय रामायाकुण्ठमेधसे।
रमामानसहंसाय गोविन्दाय नमो नमः॥ ९॥
कंसवंशविनाशाय केशिचाणूरघातिने।
वृषभध्वजवन्द्याय पार्थसारथये नमः॥ १०॥
वेणुवादनशीलाय गोपालायाहिमर्दिने।
कालिन्दीकूललीलाय लोलकुण्डलधारिणे॥ ११॥
वल्लवीनयनाम्भोजमालिने नृत्यशालिने।
नमः प्रणतपालाय श्रीकृष्णाय नमो नमः॥ १२॥
नमः पापप्रणाशाय गोवर्द्धनधराय च।
पूतनाजीवितान्ताय तृणावर्तासुहारिणे॥ १३॥
निष्कलाय विमोहाय शुद्धायाशुद्धवैरिणे।
अद्वितीयाय महते श्रीकृष्णाय नमो नमः॥ १४॥
प्रसीद परमानन्द प्रसीद परमेश्वर।
आधिव्याधिभुजङ्गेन दष्टं मामुद्धर प्रभो॥ १५॥
श्रीकृष्ण रुक्मिणीकान्त गोपीजनमनोहर।
संसारसागरे मग्नं मामुद्धर जगद्गुरो॥ १६॥
केशव क्लेशहरण नारायण जनार्दन।
गोविन्द परमानन्द मां समुद्धर माधव॥ १७॥

'सम्पूर्ण विश्व जिनका स्वरूप है, जो विश्वके पालन और संहारके एकमात्र कारण हैं तथा जो स्वयं ही विश्वरूप और इस विश्वके अधीश्वर हैं, उन भगवान् गोविन्दको बारम्बार नमस्कार है। जो विज्ञानस्वरूप और परमानन्दमयविग्रह हैं तथा जो जीवमात्रको अपनी ओर आकृष्ट कर लेनेवाले हैं, गोपसुन्दरियोंके प्राणनाथ उन भगवान् गोविन्दको प्रणाम

है, प्रणाम है। जो नेत्रोंमें कमलकी शोभा धारण करते और कण्ठमें कमलपुष्पोंकी माला पहनते हैं, जिनकी नाभिसे कमल प्रकट हुआ है तथा जो कमला—लक्ष्मी, लक्ष्मीस्वरूपा गोपाङ्गनाओंके तथा श्रीराधाके प्राणेश्वर हैं, उन भगवान् श्यामसुन्दरको नमस्कार है, नमस्कार है। मस्तकपर मोरपंखका मुकुट धारण करके जो परम सुन्दर दिखायी देते हैं, जिनमें सबका मन रमण करता है, जिनकी बुद्धि एवं स्मरणशक्ति कभी कुण्ठित नहीं होती तथा जो लक्ष्मी, गोपसुन्दरीगण तथा श्रीराधाके मानसमें विहार करनेवाले राजहंस हैं, उन भगवान् गोविन्दको बारम्बार प्रणाम है। जो कंसके वंशका विध्वंस करनेवाले तथा केशी और चाणूरके विनाशक हैं, भगवान् शङ्करके भी जो वन्दनीय हैं, उन पार्थसारथि भगवान् श्रीकृष्णको नमस्कार है। अधरोंपर बाँसुरी रखकर उसे बजाते रहना जिनका स्वाभाविक गुण है, जो गौओंके पालक तथा कालियनागका मान मर्दन करनेवाले हैं, कालिन्दीके रमणीय तटपर कालियह्रदमें नागके फणोंपर चञ्चलगतिसे जिनकी अविराम लास्य-लीला हो रही है, अतएव जिनके कानोंमें धारण किये हुए कुण्डल हिलते हुए झलमला रहे हैं, सहस्रों गोपसुन्दरियोंके निर्निमेष नेत्र जिनके श्रीअङ्गोंमें प्रतिबिम्बित होकर विकसित कमल-पुष्पोंकी मालासदृश शोभा पा रहे हैं तथा जो नृत्यमें संलग्न होकर अतिशय शोभायमान दिखायी देते हैं, उन शरणागत जनोंके प्रतिपालक भगवान् श्रीकृष्णको प्रणाम है, प्रणाम है। जो पाप और पापात्मा असुरोंके विनाशक हैं, व्रजवासियोंकी रक्षाके लिये हाथपर गोवर्धन धारण करते हैं, पूतनाके प्राणान्तकारक तथा तृणावर्त असुरके प्राण-संहारक हैं, उन भगवान् श्रीकृष्णको नमस्कार है। जो कला (अवयव)-से रहित हैं, जिनमें मोहका सर्वथा अभाव है, जो स्वरूपसे ही परम विशुद्ध हैं, अशुद्ध (स्वभाव तथा आचरणवाले) असुरोंके शत्रु हैं, तथा जिनसे बढ़कर या जिनके समान भी दूसरा कोई नहीं है, उन सर्वमहान् परमात्मा श्रीकृष्णको बारम्बार नमस्कार है। परमानन्दमय परमेश्वर! मुझपर प्रसन्न होइये, प्रसन्न होइये। प्रभो! मुझे आधि (मानसिक व्यथा) और व्याधि (शारीरिक व्यथा)-रूपी सर्पोंने डस लिया है; कृपया मेरा उद्धार कीजिये। हे कृष्ण! हे रुक्मिणीवल्लभ! हे गोपसुन्दरियोंका चित्त चुरानेवाले श्यामसुन्दर! मैं संसार-समुद्रमें डूब रहा हूँ। जगद्गुरो! मेरा उद्धार कीजिये। हे केशव! क्लेशहारी नारायण! जनार्दन! परमानन्दमय गोविन्द! माधव! मेरा उद्धार कीजिये'॥ ६—१७॥

'मुनिवरो! जिस प्रकार मैं इन प्रसिद्ध स्तुतियोंद्वारा भगवान्‌की आराधना करता हूँ, उसी प्रकार तुमलोग भी पाँच पदोंवाले पूर्वोक्त मन्त्रका जप और श्रीकृष्णका ध्यान करते हुए उनकी आराधनामें लगे रहो। इसके द्वारा संसार-समुद्रसे तर जाओगे।' इस प्रकार ब्रह्माजीने उन सनकादि मुनियोंको उपदेश दिया॥ १८॥

जो इस पूर्वोक्त पञ्चपद-मन्त्रका सदा जप करता है, वह अनायास ही भगवान्‌के उस अद्वितीय परमपदको प्राप्त हो जाता है। भगवान्‌का वह परमपद गतिशील नहीं—नित्य स्थिर है; फिर भी वह मनसे भी अधिक वेगवाला है। भगवत्स्वरूप होनेके कारण ही वह एक—अद्वितीय है। देवता अर्थात् वाणी आदि इन्द्रियाँ वहाँतक कभी नहीं पहुँच सकी हैं। इन्द्रियोंकी जहाँ-जहाँ गति है, वहाँ-वहाँ वह पहलेसे ही पहुँचा हुआ है। तात्पर्य यह कि भगवान्‌का परमपद नित्य, स्थिर, एक और सर्वव्यापी है। इसलिये भगवान् श्रीकृष्ण ही परमदेव हैं। उनका ध्यान करे, मन्त्रजपद्वारा उनके नामामृतका रसास्वादन करे तथा उन्हींका सदा भजन करे, उन्हींका सदा भजन करे॥ १९-२०॥ ॐ तत्सत्॥

॥ अथर्ववेदीय गोपालपूर्वतापनीयोपनिषद् समाप्त॥

शान्तिपाठ

ॐ भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः।
स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवाꣳसस्तनूभिर्व्यशेम देवहितं यदायुः॥
स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः।
स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु॥

ॐ शान्तिः! शान्तिः!! शान्तिः!!!